2 जुलाई 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-४, बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

स्व-पर में किंचित् मात्र भी हस्तक्षेप करना महा-हिंसा है; अपने आत्मा की हिंसा है।

ह्न अध्यात्म गंगा, पृ. १०२

वर्ष : 30, अंक : 7 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (प्रथम), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

संपूर्ण देश में विशाल धार्मिक शिविरों की धूम

1. कोटा (राज.) : श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल, कोटा के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा दिनांक 10 जून से 19 जून 07 तक जैन दर्शन एवं व्यक्तित्व विकास ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में कोटा के अतिरिक्त हाडौती, मेवाड एवं मध्यप्रदेश के कुल 34 स्थानों पर विविध धार्मिक कक्षाओं से लगभग 2500 बालक-बालिकायें लाभान्वित हुये।

शिविर में बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित कमलजी जबेरा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित संजयजी शास्त्री भैसरोडगढ़, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली एवं विदुषी राजकुमारी बेन जयपुर के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

श्रुतपंचमी एवं समापन समारोह के अवसर पर शोभायात्रा निकाली गई। **ह्न आशीष शास्त्री**

2. स्तवनिधी (बेलगाँव-कर्ना.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल में अध्ययनरत लगभग 450 बालकों में जैन धर्म की प्रारंभिक शिक्षा एवं नैतिक संस्कारों का बीजारोपण हो इस उद्देश्य से प्रथम बार ही दि. 4 जून से 14 जून 07 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा जिनधर्म प्रवेशिका की सामूहिक कक्षा ली गई। जिसमें द्रव्य-गुण-पर्याय एवं छह सामान्य गुणों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी गई।

दोपहर एवं सायंकालीन सत्र में कक्षा 5 से 9 वीं तक छात्रों के लिए बालबोध पाठमाला भाग-1,2 व 3 की कन्नड़ एवं मराठी भाषा में संचालित 10 कक्षायें पण्डित जिनचन्दजी आलमान हेरले, पण्डित सुधाकरजी शास्त्री इण्डी, पण्डित जितेन्द्रजी राठी जयपुर, पण्डित अनिलजी आलमान हेरले, पण्डित अभिनन्दनजी पाटिल हेरले, पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, पण्डित अभिजीतजी अलगौंडर शेडबाल, पण्डित दीपकजी मजलेकर आलते एवं पण्डित सूरजजी पाचोरे नान्द्रे ने ली।

शिविर में अनेक धार्मिक प्रतियोगिता के अतिरिक्त कण्ठपाठ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया; जिसमें 289 छात्रों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक भाग लेकर अनेक विषयों को कण्ठस्थ किया। रात्रि में विद्यार्थियों के लिये कथावाचन का आयोजन पण्डित जितेन्द्रजी राठी ने किया।

दिनांक 14 जून को आयोजित परीक्षा में 345 छात्रों ने उपस्थिती दर्ज कराई। उत्तीर्ण समस्त छात्रों एवं कण्ठपाठ प्रतियोगियों को लगभग 11 हजार रुपयों के पुरस्कार श्रीमती इन्दुमती अण्णासाहेब खेमलापुरे, घटप्रभा ने वितरित किये।

संपूर्ण शिविर में गुरुकुल के ट्रस्टी श्री अभयजी अथणे, संचालक श्री बी.आर. चौगुले एवं अन्य कार्यकर्ताओं तथा सर्वोदय स्वाध्याय समिति, कोल्हापुर का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर खर्च हेतु श्रीमती लता विपिन गाला मुम्बई की ओर से 20 हजार तथा श्रीमती गीताबेन गाँगजी गाला की ओर से 5 हजार रुपये की दानराशि प्राप्त हुई।

3. भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री डालचन्द कमलश्री बाई दि. जैन सार्वजनिक न्यास भोपाल द्वारा संचालित 1008 श्री सीमंधर जिनालय में वेदी प्रतिष्ठा के नवमें वार्षिकोत्सव पर दिनांक 3 जून से 10 जून 07 तक बाल एवं युवा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में बाल ब्र. श्री सत्येन्द्रकुमारजी मौ, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित राजीवजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित कमलेशजी शास्त्री मौ, ब्र. अमितजी मोदी विदिशा, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर एवं ब्र. नन्हेभाई सागर द्वारा बालकों को संस्कारित किया गया।

इसी शृंखला में बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में दि. 12 जून से 17 जून 07 तक कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर एवं विदुषी श्रीमती पुष्पाजी जैन खण्डवा के आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान के कार्य पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सुनीलजी धवल एवं पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

दिनांक 17 जून से 22 जून 07 तक श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल चौक मन्दिर में ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा मोक्षमार्ग की पूर्णता विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही दिनांक 20 जून को आपका एक प्रवचन पिपलानी जैन मुमुक्षु मण्डल में भी हुआ। **ह्न हेमचन्द जैन 'हेम'**

सम्पादकीय –

समाधि और सल्लेखना

(७) – रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

निज त्रिकाल शुद्ध चैतन्य भगवान तो सदा अमर ही है। देह के सम्बन्ध की स्थिति पूर्ण होने की अपेक्षा मरण कहते हो तो भले कहो, परन्तु अनादिनिधन सत् ज्ञायकप्रभु की स्थिति कभी पूर्ण नहीं होती, वह तो सदा अमर ही है।

'सिर पर मौत के नगाड़े बज रहे हैं, सिर पर मौत मँडरा रही है।' ऐसा बारम्बार स्मरण में लाकर तू भी सदा उस अमर निज शुद्धात्मतत्त्व के प्रति उग्र आलम्बन का जोरदार पुरुषार्थ कर !

मरण के समय कदाचित् निर्विकल्प शुद्धोपयोग न भी हो; भले ही विकल्प हों, परन्तु स्वभाव के आश्रय से परिणति में प्रगट हुई जो सतत वर्तती शुद्धि की धारा है, वह एकाग्रता और समाधि ही है।

ज्ञानी को दृष्टि–अपेक्षा जितनी स्वरूप स्थिरता है, उसकी अपेक्षा निर्विकल्पधारा सतत वर्त रही है, परन्तु देह छूटने के समय उपयोग निर्विकल्प ही हो, उपयोग में विकल्प का अंश भी न रहे ह्न ऐसा नहीं होता। कभी–कभी विकल्प हो सकते हैं, साधक–मूर्च्छित भी हो सकता है; परन्तु अन्तर में स्वभाव के आश्रय से परिणति में प्रगट हुई एकाग्रता है; इसलिए **मरणकाल में उसका समाधिपूर्वक देह छूटेगा। ज्ञानियों को ख्याल में है कि यद्यपि देह छूटने के प्रसंग में विकल्प आ सकते हैं, देहाश्रित (ब्रेन हेमरेज आदि) मूर्च्छित होने जैसी बीमारी भी संभव है तथापि उन्हें अन्तरंग में समाधि है।**

मोक्षमार्गप्रकाशक में आता है कि **'मुनिजनों को स्त्री आदि का परीषह होने पर वे उसे जानते ही नहीं, मात्र अपने स्वरूप का ही ज्ञान करते रहते हैं ह्न ऐसा मानना मिथ्या है। वे उसे जानते तो हैं, परन्तु रागादिक नहीं करते।'**

इसीप्रकार ज्ञानियों को मरणकाल में भूमिकानुसार विकल्प होने पर भी अन्तरंग में वीतरागभाव होने से समाधिपूर्वक देह छूटती है।

श्रीमद् राजचन्द्रजी ने भी अपने अन्त समय में छोटे भाई से कहा था ह्न 'मनसुख! माँ को चिन्तातुर मत होने देना। **अब, मैं स्वरूप में लीन होता हूँ।'** इसप्रकार उन्हें स्वरूप की दृष्टि और अनुभव तो था, परन्तु माँ को चिन्ता न हो ह्न ऐसा विकल्प आ गया, सो भाई से कह दिया। फिर आँख बंद करने पर थोड़ी देर में देह छूट गई।

प्रश्न :ह्न कोई ज्ञानी मरणकाल में बेसुध हों अथवा बकवास कर रहे हों तो भी क्या उन्हें समाधि होती है?

उत्तर :ह्न कदाचित् ज्ञानियों को इन्द्रिय–निमित्तक ज्ञान में किञ्चित् फेरफार हो जाए, जरा बेसुधपना हो जाए, तथापि उनके **अन्दर ज्ञानधारा सतत् वर्तती होने से समाधि है।**

समाधिशतक में ऐसा आता है कि भेदज्ञानी अन्तरात्मा निद्रा अवस्था में होने पर भी कर्म–बन्धन से मुक्त होते हैं।

समाधिमरण का स्वरूप : पण्डित गुमानीराम

पण्डित गुमानीराम जो लिखते हैं उसका संक्षिप्त सार इसप्रकार है ह्न

''समाधि नाम निःकषाय का है, शान्त परिणामों का है। कषाय रहित शान्त परिणामों से मरण होना समाधिमरण है। सम्यग्ज्ञानी पुरुष का यह सहज स्वभाव है कि वह समाधिमरण की ही इच्छा करता है। मरण समय आने पर वह सावधान होता है।

सम्यग्दृष्टि के हृदय में आत्मा का स्वरूप प्रगट रूप से प्रतिभासित होता है। वह अपने को चैतन्य धातु का पिण्ड, अनन्तगुणों से युक्त जानता है। वह परद्रव्य के प्रति रंचमात्र भी रागी नहीं होता। वह अपने निज स्वरूप को रागादि रहित, ज्ञाता–दृष्टा, परद्रव्य से भिन्न, अविनाशी जानता है और परद्रव्य को क्षणभंगुर, अ–शाश्वत, अपने स्वभाव से भिन्न जानता है। इसकारण सम्यग्ज्ञानी को मरणभय नहीं होता।

सम्यग्ज्ञानी मरण के समय इसप्रकार भावना करता है कि मुझे ऐसे चिन्ह दिखाई देने लगे हैं कि अब इस शरीर की स्थिति थोड़ी है, इसलिए मुझे सावधान होना उचित है, देर करना उचित नहीं है।

ज्ञानी विचार करता है कि ह्न मैं ज्ञाता–दृष्टा रहकर देह के होनेवाले क्षण–क्षण के परिवर्तन को देख रहा हूँ, जान रहा हूँ। मैं तो इसका पड़ौसी हूँ, स्वामी नहीं। मैं इसका कर्त्ता भी नहीं हूँ। मैं तो इसमें होनेवाले परिवर्तन को तमासगीर की तरह देख रहा हूँ। शरीर के अनंत परमाणुओं का परिणमन इतने दिन एक सा रहा ह्न यह आश्चर्य है। अब वही परमाणु अन्य रूप परिणमन करने लगे ह्न इसमें क्या आश्चर्य? मेरा स्वरूप तो चेतनास्वभावी है, शाश्वत है। मेरा मरण नहीं होता।

तीन लोक में जितने पदार्थ हैं, वे सब अपने–अपने स्वभाव रूप परिणमन करते हैं कोई किसी का कर्त्ता–भोक्ता नहीं है। स्वयं उत्पन्न होता है, स्वयं ही विघट जाता है, स्वयं ही मिलता है, स्वयं ही बिछुड़ जाता है। ऐसी स्थिति में मैं इसका कर्त्ता–भोक्ता कैसे हो सकता हूँ?

मैं तो इस ज्ञायक स्वभाव का ही कर्त्ता–भोक्ता हूँ और इसी का वेदन व अनुभव करता हूँ। इस शरीर के जाने से मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं और इसके रहने से कुछ भी सुधार या लाभ नहीं है। ह्न ऐसा जानकर मैं शरीर एवं शरीर से संबंधित सभी जड़–चेतन संबंध छोड़ता हूँ।

देखो! मोह का स्वभाव? ये सब संयोगी सामग्री प्रत्यक्ष ही पर वस्तु हैं, इससे कुछ भी लाभ–हानि नहीं है तो भी यह संसारी अज्ञानी जीव इन्हें अपना समझकर, इष्ट मानकर रखना चाहता है अथवा अनिष्ट मानकर इनसे द्वेष करके हटाना चाहता है।

ज्ञानी जानते हैं कि ह्न ''मैं तो अनादिकाल से अविनाशी चैतन्य देव हूँ।'' उस पर काल (मृत्यु) का जोर नहीं चलता। अतः मुझे मृत्यु का

भय नहीं है। जो मरता है वह तो पहले से ही मरा हुआ है और जो जीवित है वह भी पहले से ही जीवित है। मैं अपने निज चैतन्य स्वभाव में स्थित हूँ, अकम्प हूँ, ज्ञानामृत से परिपूर्ण हूँ।

मेरे सर्वांग में चैतन्य ही चैतन्य इसप्रकार व्याप्त है जैसे नमक की डली में खारापना व्याप्त है। चैतन्य स्वरूप आकाश के समान निर्मल है, अविनाशी है, जैसे आकाश को तलवार से काटा नहीं जा सकता, अग्नि–पानी से जलाया–गलाया नहीं जा सकता, उसी प्रकार मेरा चैतन्य आत्मा अग्नि–पानी से जलता–गलता नहीं है। आकाश की तरह अमूर्तिक, निर्विकार और अखण्ड पिण्ड है। हाँ, आकाश और मुझमें यह अन्तर है कि वह जड़ है और मैं चैतन्य पदार्थ हूँ।

ज्ञानी मरणासन्न स्थिति में विचार करता है कि ह्न 'मुझे दोनों ही परिस्थितियों में आनन्द है। शरीर रहेगा तो फिर शुद्धोपयोग की आराधना करूँगा और शरीर नहीं रहेगा तो परलोक में जाकर शुद्धोपयोग की आराधना करूँगा।

कोई रागी जीव मरण सन्मुख सन्यासी सम्यग्दृष्टि को समझाता है कि ह्न ''यद्यपि शरीर तुम्हारा नहीं है; किन्तु ह्न इस शरीर के निमित्त से मनुष्य पर्याय में शुद्धोपयोग का साधन भली प्रकार होता है, यह जानकर इसे रखने का उद्यम करना उचित है न?''

समकिती उत्तर देता है ह्न ''हे भाई! यह जो तुमने कहा? वह तो हम भी जानते हैं; किन्तु यदि संयमादि रहते हुए शरीर रहे तो भले रहे। हमें शरीर से बैर थोड़े ही है, परन्तु यदि शरीर की रहने की स्थिति न हो तब तो उससे ममत्व छोड़कर अपने संयमादि गुण निर्विघ्न रूप से रखना ही उचित है; क्योंकि हमें दोनों ही तरह से आनंद है। जब तक शरीर रहेगा तब तक यहाँ शुद्धोपयोग की आराधना करेंगे और यदि शरीर नहीं रहेगा तो परलोक में जाकर वहाँ शुद्धोपयोग की आराधना करेंगे।''

इस प्रकार ज्ञानी को कहीं/कभी/कोई आकुलता नहीं होती।

ज्ञानी विचार करता है कि ह्न ''मेरी स्थिति तो सोलहवें स्वर्ग के उन कल्पवासी देवों की तरह है जो कौतूहलवश तमाशा हेतु मध्यलोक में आते हैं। किसी गरीब आदमी के शरीर में प्रविष्ट हो जाते हैं और उसकी सी क्रियायें करने लगते हैं। जैसे कि ह्न वह कभी तो लकड़ी का गट्ठर शिर पर रखकर बाजार में बेचने जाता है और कभी भिखारी के वेष धरकर भीख माँगने लगता है आदि। इसप्रकार जब वह यहाँ आकर नाना स्वांग बनाकर कौतूहल करता है, तब भी वह कल्पवासी देव अपने सोलहवें स्वर्ग की विभूति को एक क्षण को भी नहीं भूलता और यहाँ की स्वांग की अवस्थाओं से अहंकार–ममकार नहीं करता। इसीप्रकार ज्ञानी अपने सिद्ध समान शुद्ध आत्मा को कभी नहीं भूलता। भले ही वह संसार अवस्था में नाना पर्यायें धारण करता है और उन पर्यायों में नाना वेश धारण करता है, नाना चेष्टायें करता है, फिर भी वह अपनी मोक्ष लक्ष्मी को नहीं भूलता।

सम्यग्दृष्टि पुरुष अपनी आयु थोड़ी जानकर दान–पुण्य जो कुछ करना होता है, स्वयं करता है। जिन पारिवारिक एवं धार्मिक व्यक्तियों से परामर्श करना होता है, उनसे परामर्श करके निःशल्य हो जाता है।

इसप्रकार परम शान्त परिणामों से समाधिमरण में तत्पर रहकर अपना मानव जीवन सार्थक कर लेता है।

समाधि सार : पण्डित दीपचन्दजी

स्व–समय समाधि का स्पष्टीकरण करते हुए समाधिसार में पण्डित दीपचन्दजी ने जो लिखा है उसका सार यह है कि ह्न स्व–समय समाधि आत्मा के ध्यान से होती है और आत्मध्यान एकाग्रचिन्तानिरोध से होता है तथा एकाग्रचिन्तानिरोध राग–द्वेष के मिटने से होता है। वह राग–द्वेष इष्ट–अनिष्ट की मिथ्या कल्पनायें मिटने पर मिटता है। इसलिए जो जीव स्व–समय समाधि के इच्छुक हैं, उन्हें सर्व प्रथम इष्ट–अनिष्ट की मिथ्या कल्पनायें करना छोड़ना होगा। तभी राग–द्वेष कम होंगे। इष्टानिष्टपना छोड़ना कठिन नहीं है; क्योंकि पर पदार्थ इष्टानिष्ट है ही नहीं।

पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्ग प्रकाशक में स्पष्ट लिखा है कि ह्न ''अज्ञानी रागवश पर पदार्थ को भला जानकर इष्ट कल्पना करता और द्वेषवश बुरा मानकर अनिष्ट कल्पना करता है; जबकि कोई भी पदार्थ भला या बुरा है ही नहीं।''

अतः ऐसे भी राग–द्वेष त्याग कर अन्य चिन्ता का निरोध करके आत्मा के ध्यान में उपयोग को केन्द्रित करने से सम्यक् समाधि होती है।

जीव ज्यों–ज्यों निज तत्त्व को जानता है, आत्मा के स्वरूप को जानता है, त्यों–त्यों आत्मा की विशुद्धि वृद्धिंगत होकर केवलज्ञान के अवलम्बन से निज की महिमा जानकर आनन्द की अनुभूति करता है। बस यही समाधि का स्वरूप है। **(क्रमशः)**

ध्यान दें ह्न

'सुदृष्टि तरंगिणी की तलाश'

कानपुर के एक मुमुक्षु भाई ने हमें शुद्धिकरण की हुई एक प्रति भेजी थी। उक्त प्रति मैंने किसी साधर्मी बन्धु को सलाह मशवरा प्राप्त करने हेतु दी थी। अब हमें याद नहीं आ रहा है कि वह प्रति वर्तमान में किन सज्जन के पास है। जिस किसी महानुभाव के पास हो कृपया शीघ्र हमें सूचित करने का कष्ट करें। जिससे प्रकाशन का कार्य संभव हो सके। ह्न बसंत भाई दोशी,
महामंत्री, श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट,
१७३–१७५, मुम्बादेवी रोड, मुम्बई–४००००२

दिव्यध्वनि ट्रस्ट के नये प्रकाशन

दिव्यध्वनि प्रचार–प्रसार ट्रस्ट मुम्बई द्वारा बालकों के लिये 'जैन जी.के.भाग–५' एवं 'मुझमें भी एक दशानन रहता है' नामक पुस्तकों का नवीन प्रकाशन हो गया है। पुस्तकों का लेखन बाल मनोविज्ञान की विशेषज्ञा डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई द्वारा किया गया है।

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें ह्न 1. आराध्य प्रकाशन, ए–१७०४, गुरुकुल टावर, जे.एस.रोड, दहीसर (प.) मुम्बई–६८, ०९२२१२२५२६४

2. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–४, बापूनगर, जयपुर–१५

शिक्षण शिविर सम्पन्न

1. बीजापुर (कर्ना.) : यहाँ श्री सहस्रफणी पार्श्वनाथ दिग. जैन अतिशय क्षेत्र में श्री डी.आर. शहा के प्रयत्नों से दिनांक 30 मई से 5 जून 07 तक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा जिनधर्म प्रवेशिका तथा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा छहढाला की कक्षा एवं प्रवचनों का लाभ मिला।

2. गुना (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 1 से 10 जून तक श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में अ. भा. जैन युवा/महिला फैडरेशन द्वारा षष्टम बाल एवं प्रौढ़ शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, पण्डित अध्यात्मजी शास्त्री, विदुषी श्रीमती सुधा जैन उज्जैन, कु. स्वाति जैन जयपुर एवं कु. दीप्ति जैन खनियांधाना आदि के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई।

प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के उपरान्त पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के मांगलिक प्रवचन हुये तथा विविध बाल कक्षायें संचालित की गई। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

शिविर पण्डित सुरेशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन एवं स्थानीय विद्वानों के सराहनीय सहयोग से सम्पन्न हुआ। **ह्न अनुराग जैन**

3. कानपुर (उ.प्र.) : श्री दि. जैन आचार्य कुन्दकुन्द स्मारक चौक सर्राफा कानपुर एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दि. 27 मई से 3 जून तक सप्तम बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन कानपुर के विविधि उपनगरों में एक साथ किया गया।

शिविर में मंगलायतन से पधारे पण्डित सौधर्म जैन, पण्डित अभिषेक जैन, पण्डित अकलंक जैन, पण्डित शालीन जैन एवं स्थानीय विद्वान पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, पण्डित अनिलजी धवल, पण्डित दीपकजी धवल की उपस्थिति रही।

शिविर के अन्तिम दिन स्थानीय विधायकों के अतिरिक्त केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री प्रकाशजी जायसवाल द्वारा उत्तीर्ण बालकों को पुरस्कृत किया गया। **ह्न आलोककुमार जैन**

4. बून्दी (राज.) : यहाँ चौगान गेट, रजतगृह कॉलोनी एवं गुरुनानक कॉलोनी स्थित श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में दिनांक 15 से 27 मई, 2007 तक जैन बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में महाविद्यालय के छात्र विद्वान पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री दिग्सर, पण्डित सुमितजी शास्त्री टीकमगढ एवं स्थानीय विद्वान पण्डित विनयजी शास्त्री द्वारा कक्षाओं एवं प्रवचनों का आयोजन किया गया। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संचालित किये गये।

शिविर श्री महावीरजी गंगवाल के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ।

श्री टोडरमल महाविद्यालय का सत्र आरंभ

विगत ३० वर्षों से तत्त्वज्ञान के प्रसार–प्रसार में अग्रणी श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय का नवीन सत्र २० जून से प्रारंभ हो गया। महाविद्यालय की प्रतिदिन की दिनचर्या इसप्रकार है ह्न

५:०० से ५:३० गुरुदेव श्री का सी.डी प्रवचन,
५:३० से प्रार्थना
६:४५ से ७:३० तक पूजन
८:०० से ८:३० गुरुदेव श्री का सी.डी. प्रवचन
८:३० से ९:१५ पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का प्रवचन
९:१५ से १०:१५ तक विभिन्न कक्षायें
(समयसार, गुणस्थान, छहढाला, लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका)
१०:३० से भोजन
११:०० से ४:०० कॉलेज
४:३० से ५:१५ तक विभिन्न कक्षायें
(नयचक्र, क्रमबद्धपर्याय, तत्त्वज्ञान एवं वीतराग–विज्ञान पाठमाला)
५:३० से भोजन
६:०० से ७:३० कक्षायें (संस्कृत एवं अंग्रेजी)
७:३० से ८:०० जिनेन्द्र भक्ति
८:०० से ८:३० छात्र प्रवचन
८:३० से ९:१५ प्रवचन
(ब्र. यशपालजी जैन/पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा)
९:१५ से १०:०० विभिन्न कक्षायें
(गोम्मटसार जीवकाण्ड, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, वीतराग–विज्ञान)

प्रेरक प्रसंग ह्न

रेत और पत्थर

दो दोस्त रेगिस्तान में घूम रहे थे। सफर के दौरान उनकी कुछ कहा–सुनी हो गई और एक दोस्त ने दूसरे को थप्पड़ मार दिया। दूसरे को यह बात बुरी तो लगी; किन्तु उसने कोई प्रतिकार नहीं किया और बिना कुछ कहे, **रेत** पर लिखा, ''आज मेरे अच्छे मित्र ने मुझे थप्पड़ मारा।'' कुछ दूर चलने पर उन्हें एक तालाब दिखाई दिया। दोनों गर्मी से परेशान थे, इसीलिये उन्होंने नहाने का फैसला किया। जिसे थप्पड़ मारा था, उसका पैर फिसल गया, तैरना नहीं आने से वह डूबने लगा। उसके दोस्त ने उसे बचा लिया। जब उसे होश आया, तब उसने एक **पत्थर** पर लिखा, ''आज मेरे अच्छे मित्र ने मेरी जान बचाई।'' यह देखकर उसके मित्र ने पूछा – जब मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा तो तुमने उसे रेत पर लिखा था और जान बचाने की बात पत्थर पर लिख रहे हो, ऐसा क्यों? तब दूसरे ने जवाब दिया ह्न

''जब कोई दुःख दे तो उसे **रेत** पर लिखना चाहिये ताकि 'माफी की हवा' उसे मिटा सके, लेकिन जब कोई अच्छा करें तो उसे **पत्थर** पर लिखना चाहिये, जिसे कोई मिटा न सकें।''

निष्कर्ष ह्न किसी के द्वारा हमें दी गई तकलीफ को शीघ्र ही भुला देना चाहिये तथा दूसरों के किये उपकार को स्मरण रखना चाहिये।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र–2007

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 18 अगस्त 2007	1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 20 अगस्त 2007	1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
मंगलवार 21 अगस्त 2007	1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट –

(1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

महावीर पुरस्कार व ब्र.पूरणचन्द लुहाडिया पुरस्कार–07

प्रबन्धकारिणी कमेटी दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी के वर्ष 07 के **महावीर पुरस्कार** के लिए जैनधर्म, दर्शन, इतिहास, साहित्य, संस्कृति आदि से संबंधित किसी भी विषय की पुस्तक/शोध प्रबन्ध की चार प्रतियाँ दि. 30 सितम्बर 07 तक आमन्त्रित हैं। पुरस्कार में प्रथम स्थान प्राप्त कृति को 21001/ह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा तथा द्वितीय स्थान प्राप्त कृति को ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाडिया साहित्य पुरस्कार 5001/ ह्न एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा। 31 दिसम्बर 2004 के पश्चात् प्रकाशित पुस्तक ही इसमें सम्मिलित की जा सकती है।

पुरस्कारों की नियमावली तथा आवेदनपत्र प्राप्त करने के लिए संस्थान कार्यालय श्री दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर–04 से पत्र व्यवहार करें। **– डॉ. कमलचन्द सोगाणी**

वैराग्य समाचार

1. अशोकनगर (म.प्र.) निवासी श्री सुमेरचन्द मानोरिया का १४ जून को ८२ वर्ष की आयु में शांत परिणामों से स्वर्गवास हो गया।

आप विगत ४० वर्षों से गुरुदेवश्री के सदुपदेश से प्रभावित होकर तत्त्व की प्रभावना में तत्पर रहे। आपके अथक् प्रयास से अशोकनगर में श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के अंतर्गत विशाल जिनमंदिर, स्वाध्याय हॉल और पाठशाला भवन का निर्माण संभव हो सका।

आपकी स्मृति में श्री राजेन्द्र कुमार एवं श्री प्रदीप कुमार मानोरिया के द्वारा जैन पथप्रदर्शक को ११००/– रुपये की राशि प्राप्त हुई।

2. कुरावड़ निवासी श्रीमती साईबाई ध.प. स्व. जवानमलजी भोरावत का दिनांक ६ जून ०७ को ८८ वर्ष की उम्र में देलविलय हो गया। आप धार्मिक एवं स्वाध्यायी थीं। आपने गुरुदेवश्री के सानिध्य में कुरावड़ पंचकल्याणक में ब्रह्मचर्य व्रत लिया था ।

आपकी स्मृति में श्री भगवतीलाल भोरावत की ओर से जैन पथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग–विज्ञान को १०००/– रुपये प्राप्त हुये।

3. भोपाल (शक्तिनगर) निवासी श्री गुलाबचन्दजी जैन का २६ जून ०७ को हृदयाघात के कारण आकस्मिक देलविलय हो गया।

आप अध्यात्मरसिक एवं स्वाध्यायी व्यक्ति थे। श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, पिपलानी (भोपाल) में विगत अनेक वर्षों से आप नियमित प्रवचन करते थे। आपके निधन से मुमुक्षु मण्डल को गहरा आघात हुआ है। आपकी स्मृति में जैन पथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग–विज्ञान को ५०२/– रुपये प्राप्त हुये।

4. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महा. के स्नातक पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली के दादा **श्री शिखरचन्द जैन** (छीटापारा वालों) का ११ जून ०७ को शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप धार्मिक रुचिवन्त एवं सरल परिणामी थे। आपकी स्मृति में जैन पथप्रदर्शक एवं वीतराग विज्ञान को २०१/– रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त करें ह्न यही भावना है।

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 10

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

निश्चय रत्नत्रय के प्रतिपादन में आत्मा की रुचि, आत्मा का जानना और आत्मा की लीनता ह्न इन तीनों में आत्मा ही मुख्य है; इसलिये उक्त मोक्षमार्ग को प्रगट करने के लिये आत्मा को जानना बहुत जरूरी है।

सारी दुनिया को जाना और आत्मा को नहीं जाना तो समझ लेना कुछ नहीं जाना। कहा भी है ह्न

जाना नहीं निज आत्मा ज्ञानी हुये तो क्या हुये।
ध्याया नहीं निज आत्मा तो ध्यानी हुये तो क्या हुये।।

तीन लाईनों में तो निश्चय की बात करके चौथी लाईन में कह दिया कि अब व्यवहार मोक्षमार्ग के बारे में सुनो, जो निश्चय का हेतु है, साधन है, कारण है।

प्रश्न : निश्चय से तो मात्र अपने आत्मा को ही जानना है; पर व्यवहार में तो सात तत्त्वों को जानने की बात कही गई है, देव–शास्त्र–गुरु को जानने की बात कही गई है। इनको जाने कि नहीं ?

उत्तर : यदि अपनी आत्मा को जानना है तो यह भी जानना पड़ेगा कि जिसे मैं आजतक आत्मा जानता रहा हूँ, वह क्या है ?

आत्मा से भिन्न जो कुछ भी इस जग में है, उसे एक शब्द से कहना हो तो अनात्मा ही कहना होगा। तात्पर्य यह है कि आत्मा को जानने के लिये अनात्मा को भी जानना होगा।

विगत ढाल में कहा भी है कि ह्न

आतम–अनात्म के ज्ञानहीन, जे जे करनी तन करन छीन।

जो व्यक्ति आत्मा और अनात्मा के ज्ञान से रहित हैं, वे धर्म के नाम पर जो भी क्रिया करते हैं, वह सब क्रिया तन को क्षीण करनेवाली है, शरीर को सुखानेवाली है। इससे अधिक कुछ नहीं।

आत्मा माने जीव और अनात्मा माने अजीव। इसप्रकार आत्मा और अनात्मा को जानना जीव–अजीव तत्त्व को जानना ही तो हुआ।

जिसे शुद्ध घी की दुकान करना है, उसे घी के साथ–साथ उन वस्तुओं का ज्ञान करना भी जरूरी है कि जिनको धोके से घी समझा जा सकता है; अन्यथा हम मिलावट से बच नहीं सकते।

उसीप्रकार हमें आत्मा का ध्यान करना है तो आत्मा (जीव) के साथ–साथ अनात्मा (अजीव) को भी जानना होगा, अन्यथा हम मिलावट से नहीं बच सकते।

सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र की शर्त पर से भिन्न आत्मा को जानने की है; अत: स्व और पर अर्थात् आत्मा–अनात्मा का ज्ञान जरूरी है।

हाँ, इतना अन्तर अवश्य है कि आत्मा (स्व) को पाने के लिए जानना है और अनात्मा (पर) को छोड़ने के लिए जानना है; उसमें से अपनापन तोड़ने के लिये जानना है।

दोनों के जानने में बहुत बड़ा अन्तर है। मान लीजिये हमें जयपुर जाना है और हम एक चौराहे पर खड़े हैं तो हमें जयपुर का रास्ता भी जानना और जो रास्ते जयपुर नहीं जाते, उन्हें भी जानना है; पर दोनों के जानने में अन्तर है।

जिस रास्ते पर जाना है; उसे तो पूरी तरह जानना है। यह भी जानना है कि रास्ता ठीक तो है, रास्ते में डर तो नहीं है, रात को भी जा सकते हैं या नहीं, पेट्रोल पंप और चाय की दुकाने हैं या नहीं; पर जिन रास्तों पर जाना नहीं है; उन्हें मात्र इतना ही जानना है कि ये रास्ते जयपुर के नहीं हैं। उनके बारे में इससे अधिक कुछ जानने की जरूरत नहीं है; क्योंकि हमें उनपर जाना ही नहीं है।

इसीप्रकार आत्मा (जीव) को तो निजरूप जानना–मानना है; उसी में रम जाने के लिये जानना है; किन्तु अनात्मा अर्थात् परपदार्थों को 'ये पर हैं' ह्न मात्र इतना ही जानना है, इससे अधिक कुछ नहीं।

जीव को ऐसा जानना है कि यह ज्ञानानन्द स्वभावी जीव मैं हूँ और अजीव को ऐसा जानना है कि ये शरीरादि अजीव पदार्थ मैं नहीं हूँ। इसका नाम जीव–अजीव तत्त्व का ज्ञान है।

यहाँ शरीर में कितनी हड्डियाँ हैं और कितना खून होता है ह्न यह जानना शरीर का जानना नहीं है; पर पुद्गलरचित हाड़–मांस का यह शरीर मैं नहीं हूँ ह्न इतना जानना ही पर्याप्त है।

आत्मा तीन प्रकार के हैं ह्न बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा। देह (अजीव) और जीव को एक माननेवाले बहिरात्मा हैं और अन्तरात्मा तीन प्रकार के हैं ह्न उत्तम, मध्यम और जघन्य।

दो प्रकार के परिग्रह से रहित, अपने आत्मा का ध्यान करनेवाले सातवें से बारहवें गुणस्थान तक के शुद्धोपयोगी मुनि उत्तम अन्तरात्मा हैं तथा पंचम गुणस्थानवर्ती अणुव्रती गृहस्थ और छटवें गुणस्थान में रहनेवाले शुभोपयोगी मुनिराज मध्यम अन्तरात्मा हैं। अविरत सम्यग्दृष्टि श्रावक जघन्य अन्तरात्मा हैं। ये तीनों ही अन्तरात्मा मोक्षमार्गी हैं।

सकल और निकल के भेद से परमात्मा दो प्रकार के हैं। घातिया कर्मों को नष्ट करनेवाले और लोकालोक में देखने–जाननेवाले अरहंत भगवान देहसहित होने से सकल परमात्मा हैं और ज्ञान ही है शरीर जिनका, ऐसे द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से रहित अमल सिद्ध भगवान देहरहित होने से निकल परमात्मा हैं। ये निकल और सकल परमात्मा अनंत सुख को अनन्तकाल तक भोगनेवाले हैं।

इनमें से बहिरात्मापने को हेय जानकर छोड़ देना चाहिए, अन्तरात्मा हो जाना चाहिये और परमात्मा का ध्यान निरन्तर करना चाहिये; उससे नित्यानन्द की प्राप्ति होगी।

चेतना से रहित अजीव पाँच प्रकार के हैं। जिनमें आठ स्पर्श, पाँच

वर्ण, पाँच रस और दो प्रकार की गंधवाला पुद्गल है; जीव और पुद्गलों को चलने में निमित्तरूप धर्मद्रव्य और ठहरने में निमित्तरूप अधर्मद्रव्य अमूर्तिक होने से अरूपी हैं।

जिसमें छहों द्रव्य रहते हैं, वह आकाश है; वर्तना निश्चयकाल है और घड़ी–घंटा, दिन–रात व्यवहारकाल है।

यह तो जीव–अजीव तत्त्व की बात हुई; अब कहते हैं कि आत्मा में उत्पन्न होनेवाले विकारी पर्यायरूप मोह–राग–द्वेषभाव भी आत्मा नहीं हैं; क्योंकि ये भाव आस्रवभाव हैं, बंधरूप भाव हैं, पुण्य–पापरूप भाव हैं। मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद और कषाय सहित उपयोग ही आस्रव है और आत्मप्रदेशों के साथ कर्मों का बंधन बंध है। ये आस्रव और बंध आत्मा को दु:ख देनेवाले हैं।

कहा भी है ह्न

ये ही आतम को दु:ख कारण, तातैं इनको तजिये।
जीव प्रदेश बँधैं विधि सौं सो, बंधन कबहुँ न सजिये।।

ये आस्रवभाव आत्मा को दु:ख देनेवाले हैं; इसलिए इनको छोड़ देना चाहिये और आत्मप्रदेशों के साथ कर्मों का बंधना बंध है; ऐसा बंध कभी नहीं करना चाहिये।

इन्हें विस्तार से जाने तो ठीक, न जाने तो भी कोई बात नहीं; पर ये जो रागादिभाव आस्रव हैं, बंध हैं; ये मैं नहीं हूँ। यद्यपि ये मेरी ही विकारी पर्याये हैं, पर दु:खदायी हैं; इसलिए मेरी नहीं हैं। जो दु:ख का कारण होते हैं, वे निकाल देने लायक होते हैं। यदि उन्हें आप अपना मानेंगे तो फिर निकालेंगे कैसे ?

इसलिए वे भले ही अपने में पैदा होते हैं, पर दु:ख के कारण होने से हमारे नहीं हैं। हम इस बात को निम्नलिखित उदाहरण से समझ सकते हैंह्न

मैं एक स्थान पर पर्यूषण में व्याख्यान कर रहा था। एक अम्माजी प्रवचन के बीच में ही एकदम खड़ी हो गई और कहने लगीं ह्न पण्डितजी! प्रवचन बंद करो और पहले मेरी बात सुनो। मैं चार दिनों से भूखी बैठी हूँ, ये पंच लोग मेरे खाने का इंतजाम क्यों नहीं करते ?

मैंने कहा ह्न गजब हो गया, एक साधर्मी बहन भूखी बैठी है और बड़े–बड़े दानवीर लोग यहाँ बैठे हैं। क्यों भाई ! क्या बात है?

लोगों ने कहा ह्न पण्डितजी ! आप इन बातों में मत उलझो। उस अम्मा के चार–चार जवान बेटे हैं, एक–एक की चार–चार दुकानें हैं; चारों करोड़पति हैं। इनकी व्यवस्था वे नहीं करते तो हम क्यों करें ?

मैंने कहा ह्न बात तो सच्ची है। क्यों अम्माजी तुम्हारे चार–चार बेटे हैं न?

अम्मा ने कहा ह्न मेरा एक भी बेटा नहीं है।

पंच कह रहे थे कि चार–चार बेटे हैं और अम्मा कह रही थी कि मेरा एक भी बेटा नहीं है। अत: मैंने अम्मा से कहा ह्न अम्मा! सच बोलो, इतने लोग कह रहे हैं कि तुम्हारे चार–चार बेटे हैं।

अम्मा ने अत्यन्त अरुचिपूर्वक दु:ख के साथ कहा ह्न

बेटा ! ये बेटे नहीं होते तो अच्छा था, ये तो नहीं होने से भी बुरे हैं; क्योंकि वे खुद व्यवस्था करते नहीं हैं और वे हैं, इसलिए पंच भी व्यवस्था नहीं करते हैं। उनका होना मेरे लिए नहीं होने से भी बुरा है। इससे तो मैं बाँझ रह जाती तो अच्छा रहता। मैं उन्हें अपना बेटा नहीं मानती हूँ।

यद्यपि वे बेटे उसकी कूंख से पैदा हुये हैं; फिर भी वह उन्हें अपना नहीं मानती; क्योंकि वे सुखदायक नहीं, दु:खदायक हैं।

इसीप्रकार यद्यपि मोह–राग–द्वेषरूप आस्रवभाव, बंधभाव, पुण्य–पापभाव आत्मा में ही पैदा होते हैं, आत्मा की ही विकारी पर्यायें हैं; तथापि ज्ञानीजन उन्हें अपना नहीं मानते; क्योंकि वे आत्मा को सुखदायक नहीं, दु:खदायक हैं।

इसप्रकार आस्रव, बंध और पुण्य–पाप की चर्चा की।

अब संवर, निर्जरा व मोक्ष तत्त्व की चर्चा करते हैं।

शम–दम तैं जो कर्म न आवैं, सो संवर आदरिये।
तप–बल तैं विधि–झरन निर्जरा, ताहि सदा आचरिये।।
सकल कर्म तैं रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी।

सम्यग्दर्शनपूर्वक कषायों के शमन और इन्द्रियों के दमन से जो कर्मों का आस्रव रुकता है, वह संवर है; उसका आदर करना चाहिये और तीन कषाय के अभावरूप शुद्धपरिणति तथा शुद्धोपयोगरूप तप के बल से जो पुराने कर्म झरते हैं, वह निर्जरा है। इस निर्जरा का आचरण सदा करना चाहिए। सम्पूर्ण कर्मों से रहित जो जीव की अवस्था है, वह अनन्तसुखमय मोक्ष है।

तत्त्वोंसंबंधी उक्त व्याख्या यद्यपि एक–एक पंक्ति में ही है; तथापि उन एक–एक पंक्तियों में न केवल संबंधित तत्त्व का स्वरूप पूर्णत: स्पष्ट हो गया है; अपितु तत्संबधित हेयोपादेय व्यवस्था भी बता दी गई है। यही कारण है कि छहढाला को गागर में सागर कहा जाता है।

पंक्तियों की अन्तिम शब्दावली देखने लायक है। तजिये, न सजिये, आदरिये और आचरिये ह्न इन चार शब्दों में आस्रव–बंध का हेयपना और संवर–निर्जरा का उपादेयपना स्पष्ट हो गया है।

तत्त्वों के स्वरूप प्रतिपादन में हम कितना ही विस्तार क्यों न कर दें; किन्तु यदि हेयोपादेय नहीं बताया गया तो समझिये बात अधूरी ही रह गयी है। अब कहते हैं कि ह्न

इह विधि जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यवहारी।।

इसप्रकार हेयोपादेय व्यवस्था सहित उक्त सात तत्त्वों की जो श्रद्धा है, उसे व्यवहार सम्यग्दर्शन कहते हैं।

इसके बाद दौलतरामजी कहते हैं ह्न

देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
ये हु मान समकित को कारण, अष्ट अंगजुत धारो।।

जिनेन्द्र देव, परिग्रह रहित गुरु और करुणामयी धर्म को भी सम्यग्दर्शन का कारण मानना चाहिये। अत: हे भव्यजीवों ! इस सम्यग्दर्शन को आठ अंगों सहित धारण करो। **(क्रमश:)**

२ जुलाई २००७, मूल्य : २/- आर. एन. आई. ३११०९/७७ RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

प्रतियोगिता सम्पन्न

आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति फिरोजाबाद द्वारा जिला-स्तरीय जिनवाणी साज सज्जा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया; जिसका पुरस्कार वितरण फिरोजाबाद में २४ जून ०७ को सम्पन्न हुआ।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मोनिका जैन सिरसागंज, द्वितीय स्थान आराधना जैन फिरोजाबाद एवं तृतीय स्थान निशि जैन करहल ने प्राप्त किया; जिन्हें क्रमश: ३१००/-, २१००/- एवं ११००/- रुपये की सम्मानराशि से पुरस्कृत किया गया। इसके अलावा २१ सान्त्वना पुरस्कार भी दिये गये। इस प्रतियोगिता में संपूर्ण जिले से १३२ प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं।

प्रतियोगिता का संयोजन पंडित सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद ने किया।

सिदनाल एवं अक्कोल में धर्मप्रभावना

श्री बाहुबली ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल, कुम्भोज बाहुबली द्वारा संचालित **श्री सन्मति विद्या मन्दिर, सिदनाल** एवं **क्षुल्लिका पार्श्वमति कन्या विद्यालय, अक्कोल** (बेलगाँव-कर्ना.) में दिनांक ५ से ११ जून तक हाईस्कूल के छात्रों के लिये शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित जितेन्द्रजी राठी, जयपुर द्वारा दोनों स्थानों के जैन-अजैन समस्त विद्यार्थियों को धर्म का स्वरूप, शाकाहार, अहिंसा, णमोकार महामंत्र आदि के माध्यम से जैनधर्म का स्वरूप विशद रीति से समझाया गया। इसी के अन्तर्गत सिदनाल में शाकाहार प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें ११२ छात्रों ने भाग लिया। समस्त छात्रों को पुरस्कार वितरण श्रीमती इन्दुमती अण्णासाहेब खेमलापुरे, घटप्रभा द्वारा किया गया।

दिनांक १२ जून को आयोजित समापन समारोह के अध्यक्ष ब्र. यशपालजी जैन ने विद्यार्थियों को महाविद्यालय में आने की प्रेरणा एवं गुरुकुल प्रणाली के प्रणेता मुनिश्री समन्तभद्र महाराज का परिचय दिया। विद्यालय के ३५० छात्रों ने जैनशिक्षा प्राप्त की।

उक्त कार्य हेतु श्री राजगोंडा पाटील, स्तवनिधी का सहयोग प्राप्त हुआ।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

हार्दिक आमन्त्रण

रविवार, दिनांक 5 अगस्त से मंगलवार, दिनांक 14 अगस्त 2007 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में 30 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर आयोजित होने जा रहा है।

शिविर में धर्मलाभार्थ पधारने हेतु आप सभी बंधुओं को वात्सल्यपूर्ण हार्दिक आमन्त्रण है।

शिविर की विस्तृत पत्रिका आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी।

हार्दिक बधाई !

1.श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के अधीक्षक श्री धर्मेन्द्र शास्त्री सुपुत्र श्री राकेशजी जैन बण्ड़ा-सागर का विवाह सौ. का. नेहा जैन सुपुत्री श्री निर्मलचन्दजी जैन मण्डीबामौरा के साथ दिनांक २० जून २००७ को सम्पन्न हुआ।

2.छिन्दवाड़ा निवासी सौ.का.अनुभूति जैन सुपुत्री श्री अजित कुमारजी जैन का विवाह जबलपुर निवासी चि. नीलेश जैन सुपुत्र श्री जयकुमारजी जैन के साथ दिनांक २७ जून २००७ को सम्पन्न हुआ।

इस उपलक्ष्य में १०१/- रुपये प्राप्त हुये।

जैन पथप्रदर्शक समिति द्वारा सभी को उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनायें। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -

ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)

फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८

फैक्स : (०१४१) २७०४१२७